

શ્રાવણ સુદ ૨, બુધવાર, તા. ૨૫ -૭-૧૯૭૯

ગાથા-૩૦૮-૩૧૧, પ્રવચન - ૫

સમયસાર, સર્વવિશુદ્ધ અધિકાર. યે અધિકાર મોક્ષ અધિકારકી ચૂલિકા હૈ. ચૂલિકાકા અર્થ યહ હૈ કિ પહલે કહા હુઆ હૈ વો ભી કહેંગે ઔર નહીં કહા વો ભી વિશેષ કહેંગે. મોક્ષ અધિકારકી યહ ચૂલિકા હૈ. ઈસમેં સ્પષ્ટ બહોત આયા હૈ. કોઈ પ્રશ્ન કરે કિ ૧૪વીં ગાથામેં, ૩૮વીં ગાથામેં—ઉસમેં સબ આયા હૈ. ૧૪વીં ગાથામેં યે કહા કિ અપના ભગવાન આત્મા અબદ્ધ હૈ. રાગસે બંધ નહીં, કર્મસે બંધ નહીં, એક પર્યાય જિતના નહીં. વો બાત યહાં આતી હૈ. ભગવાન (આત્મા) અબદ્ધસ્પૃષ્ટ હૈ. અબદ્ધસ્પૃષ્ટમેં નાસ્તિસે કથન હૈ, અસ્તિસે કહો તો મુક્તસ્વરૂપ હી ભગવાન અંદર હૈ. દ્રવ્યસ્વરૂપ.. દ્રવ્ય-વસ્તુ હૈ યે તો મુક્તસ્વરૂપ હૈ. ઉસે અબદ્ધ કહકર મુક્તસ્વરૂપકા ભી જ્ઞાન કરતે હૈં, મુક્તસ્વરૂપકી પ્રતીતિ કરતે હૈં, મુક્તસ્વરૂપકા અનુભવ કરતે હૈં, યે સારે જૈનશાસનકા અનુભવ કરતે હૈં. યે ૧૫વીં ગાથામેં કહા હૈ. સમજમેં આયા? તો ઉસમેં ભી સબ આ ગયા હૈ. ૧૪વીં, ૩૮વીં...

૭૩વીંમે ભી યહ કહા કિ એક સમયકી પર્યાય.... પરસે તો ભગવાન ભિન્ન હી હૈ, રાગસે ભી ભિન્ન હૈ. અપની જો ધર્મકી નિર્મલપર્યાય વહ સ્વદ્રવ્યકે આશ્રયસે ઉત્પન્ન હોતી હૈ, યે ષટ્કારકકે પરિણામનસે ઉત્પન્ન હોતી હૈ, દ્રવ્યસે ભી નહીં. આહાહા! સમજમેં આયા? યહાં કહા કિ અપના આત્મા ક્રમસર અપને નિર્મલ પરિણામસે ઉત્પન્ન હોતા હૈ. વસ્તુ તો ત્રિકાલી વસ્તુ હૈ. ત્રિકાલ નિર્મલ શુદ્ધ બુદ્ધ ચૈતન્યઘન, શુદ્ધ બુદ્ધ ચિદ્સ્વરૂપ પ્રભુ. શુદ્ધ હૈ, બુદ્ધ હૈ, જ્ઞાનકા પિંડ હૈ અને 'સિદ્ધ સમાન સદા પદ મેરો.' આહાહા! ઉસમેં ષટ્કારકકી પરિણતિ જો પર્યાયમેં હૈ, ધર્મકી હોં, વિકારકી નહીં, પરકી તો નહીં. અપની પર્યાયમેં ધર્મકી પરિણતિ—ચૈતન્ય શુદ્ધ ભગવંત ઉસકા અનુભવ, ઉસકી પ્રતીતિ, ઉસકા જ્ઞાન, ઉસમેં લીનતા, વો પર્યાય અપને ષટ્કારકસે ઉત્પન્ન હોતી હૈ. આહાહા! સમજમેં આયા?

૭૩મેં કહા વહી યહાં કહા. 'અપને પરિણામોંસે ઉત્પન્ન હોતા હૈ' ઉસકા અર્થ, વો પરિણામ ભી નિર્મલ ષટ્કારકસે ઉત્પન્ન હોતે હૈં. આહાહા! સૂક્ષ્મ બાત હૈ. વીતરાગકા ધર્મ વીતરાગસ્વભાવસે ઉત્પન્ન હોતા હૈ. વીતરાગસ્વભાવ(રૂપ) વો અપના પરિણામ હૈ, યે પરિણામ કહાંસે ઉત્પન્ન હુઆ? કિ ત્રિકાલી વીતરાગસ્વભાવ હૈ ઉસકે આશ્રયસે હુઆ. સમજમેં આયા? આ તો પહેલી લીટીના થોડાક શબ્દ... **જીવ ક્રમબદ્ધ એસે અપને પરિણામોંસે...** દ્રવ્ય તો દ્રવ્ય હૈ હી, પણ ઉસકી જો નિર્મલ પર્યાય હોતી હૈ યે ભી ક્રમબદ્ધ અપની પર્યાયકે કાલમેં પર્યાયકા જન્મક્ષણ હૈ. યે પર્યાયકા ઉત્પત્તિકા કાલ હૈ. આહાહા! ૧૦૨ ગાથા પ્રવચનસાર.

અપને પરિણામોંસે ઉત્પન્ન હોતા હુઆ... 'પરિણામોંસે ઉત્પન્ન હોતા હુઆ' એસા ક્યોં કહા? કિ પરિણામ દ્રવ્યકી પર્યાય હૈ ઈસ અપેક્ષાસે કહા, બાકી 'દ્રવ્યસે ઉત્પન્ન હોતા હૈ' (એસા

कहना) यह भी व्यवहार है. समझमें आया? सूक्ष्म बात है भाई! **अपने परिणामोंसे उत्पन्न होता हुआ जीव ही है...** आडाडा! अपनेको केवलज्ञान उत्पन्न होता है ये अपने परिणामसे उत्पन्न होता है. यार घातिका नाश होता है तो केवलज्ञान उत्पन्न होता है ऐसी अपेक्षा नहीं. आडाडा! जैसे दर्शनमोहनीय कर्म अंक है उसका अभाव होता है तो यद्यपि पर्याय होती है ऐसी अपेक्षा भी नहीं. आडाडा! जैसे अपनेमें, आत्म सम्यग्दर्शन शुद्ध चैतन्य आत्माका साक्षात्कार (अर्थात्) जैसा आत्मा है ऐसी ज्ञानमें आकर, अनुभवमें आकर प्रतीति की और पीछे उसमें लीनता होती है, ये भी अपने द्रव्यके आश्रयसे लीनता होती है. પણ वो लीनता भी भरेभर तो अपने षट्कारकके परिणामसे लीनता उत्पन्न होती है. आडाडा! द्रव्यसे उत्पन्न होती है यह भी अंक व्यवहार संबंध बताता है. बहुत बात सूक्ष्म छे. यह बात यार दिन यली थी, आज पांचवां दिन है. ये तो गंभीरताकी बात है. पार नहीं उसका. अमृतचंद्रचार्यकी टीका और कुंदकुंदचार्यके श्लोक. अंक-अंक श्लोकमें गंभीरताका पार नहीं.

यहां दूसरा आया. **इसीप्रकार अजीव भी...** जैसे जव भी अपनी पर्यायके कमकालमें— अपनी उत्पत्तिके कालमें—अपने परिणामसे उत्पन्न होता है, ये परिणाम यहां निर्मल लेना, मलिन नहीं. क्योंकि द्रव्यमें अनंत गुण होने पर भी कोई गुण विकृति करे पर्यायमें ऐसा कोई गुण नहीं. आडाडा! ऐसा अनंत गुणका पिंड प्रभु अपनी पर्यायसे जो उत्पन्न होता है तो अजव भी अपनी पर्यायसे कमसर उत्पन्न होता है. आडाडा! समझमें आया? ये अंगुली चलती है जैसे, तो कमबद्ध पर्यायमें स्वकालमें होनेकी क्रियाका परिणाम होना था तो हुआ है. आत्मासे हुआ है, आत्माने ऐसा किया तो अंगुली चलती है (ऐसा है नहीं). भगवानकी पूजामें स्वाडा... स्वाडाकी भाषाकी पर्याय अजवमें कमसर होनेवाली हुई है. जीशी बात. आडाडा! आ तमारा पैसावाणाअे सांभणवुं..... करोडपति बे करोड रुपिया. मंदिर बनाया न मंदिर? आठ लाख भरया. आठ लाखमें पीछे.... डम वहां रहे तब तक (वडीं) रहे तो, स्टील पडा था स्टील, उसमें सालीस लाख उत्पन्न हो गया. नझमें सालीस लाख विशेष. आठ लाख भरया ने सालीस लाख आया. (श्रोता : अखण धंधा है). ये तो अजवकी पर्याय कमसे आनेवाली थी तो आयी है, उसमें आत्माको क्या? आडाडा!

वो तो यहां कहते है, **अजीव भी क्रमबद्ध...** ये पैसेकी पर्याय उस समय ये क्षेत्रमें आनेवाली थी..., ये क्षेत्रमें (आनेवाली) थी, उसमें मान ले कि मेरा पैसा है, ये तो मिथ्या(द्रष्टि) मूढ है. आडाडा! कडो, माणोक्यंदभाई! आ तमारा पैसावाणाने..... पैसेकी पर्याय, कमबद्धमें अजवकी जो पर्याय उस समयमें यहां क्षेत्रांतर होनेवाली है ऐसी होती है. दूसरा प्राणी कडे के मैने राग किया, पुरुषार्थ किया तो पैसा कमाया, ये भ्रम यानी अज्ञान है. आडाडा! **अजीव भी...** 'अजव भी' क्यों कडा? जवकी बात पडले यली है न? अजव પણ... आडाडा! रोटी बनती है तो आटेकी पर्याय उस समय रोटी(रूप) होनेवालीथी तो हुई है. स्त्रीसे हुई नहीं, तवा-तावडीसे हुई नहीं, अग्निसे हुई नहीं. आडाडा! स्त्रीकी छंखण रोटी (बनाने)की थी तो हुई

है ऐसा भी नहीं. गजब बात है. आहा! और वो आटा लेकर उसमें वेलण डिराते हैं, तो वेलण उसको छूता है ऐसा भी नहीं. वेलण कडते हैं? ये वेलणसे रोटी जैसे चौकी होती है ऐसा है नहीं. इसकी पर्याय कमबद्धमें ऐसी होनेवाली थी तो होती है. आहाहा!

श्रोता : देजाय छे ने?

पूज्य गुरुदेवश्री : देजाय, ये तो संयोगसे देजाता है मूढ. उसकी पर्यायसे देजे तो उसकी पर्याय अपनेसे कुछ है. देजाता है संयोगसे—वेलणसे, अग्निसे. देजनेवालेकी द्रष्टिमें डेर है. आहाहा!

श्रोता : दरबारने तो आटला भधा रुपिया आवे...

पूज्य गुरुदेवश्री : कोनी पासे रुपिया आवे? क्या रुपिया धूणमां आवे?

आनी पासे तो बे करोड रुपिया छे. शांतिप्रसाद अपने यहां आते थे उसके पास वालीस करोड. उसमें क्या है? अभी अेक वैष्णव शेठ यहां मुंभई आया था डमारे दर्शन करनेको, (उसके पास) पयास करोड है. आ अमारा यीमनभाईना शेठ. यीमनभाई हैं न? उसके यहां नोकरी करते थे. छोड दी. वो वैष्णव है और औरतें हैं सब श्वेताम्बर जैन. अने लडका आदि सारे आदमी वैष्णव. ये घरमें दो (धर्म). श्रीको प्रेम है.... वो माणस भी नरम है. थोडा सुननेको आये थे. वो वैष्णव है न? (तो पूछा), मडाराज! कर्ता है कि नहीं? कर्ता है कि नहीं? ५० करोड रुपिया. धूणमें क्या है? पयास... पांय अबज है कि धूण अबज है.

जडकी पर्याय उस समय उस क्षेत्रमें आनेका कम था तो आयी है. उसके पुण्यसे आयी है ऐसा कडना ये भी निमित्तका कथन है. पूर्वका पुण्य है ये तो जडकी पर्याय है. ये (पुण्यका) परमाणु जुदी पर्याय है अने ये पैसा आता है वड दूसरी पर्याय है. पुण्यसे पैसा आया ऐसे कडना ये भी निमित्तका कथन है. आहाहा! बहुत बात..... प्रभुनो मार्ग. यहां तो प्रभुकी भक्ति करते हैं उसमें अवाज आता है 'स्वाडा', ये जडकी कमबद्धपर्यायमें होनेवाली (है तो) होती है. स्तुति करनेवाला ऐसा माने कि मैं यड भाषा करता हूं, मैं स्तुति करता हूं.. अररर! समजमें आया? ये तो मिथ्यात्वका पोषण है. आहाहा! शेठ नहीं आते बडे भाई? डरीशयंद्रभाई. नरम है. वो तो जिनेश्वरप्रसाद सडरानपुर. मैं तो डरीशयंद्र जडलपुर कडता था. आहाहा!

यहां कडते हैं कि शरीरकी पर्याय भी जब जो क्षेत्रमें जानेकी योग्यता है वहां कमबद्ध होती है. समजमें आया? ये कडते हैं, **अजीव भी कमबद्ध अपने परिणामोंसे.. अपने परिणामोंसे..** ये भी परिणाम उसको कडते हैं. पर्यायकी दशाको यहां परिणाम कडते हैं. परिणाम क्यों कडा? कि परि-समस्त प्रकारे, पर्यायके त्तेद... नियमसारमें आया है. १४वीं गाथामें. **परि समंतात् भेदम् इति गच्छतीति पर्यायः** ऐसा शब्द है नियमसार १४वीं गाथा. शरुआत करते हैं न. नियमसार १४वीं गाथा है न? संस्कृत है. **परि समंतात् भेदम् इति गच्छतीति पर्यायः** संस्कृत है. पर्याय किसको कडना? परिणाम क्यों कडा? परि-समस्त प्रकारे,

नम गया. पर्याय अपनेसे हुई है. परिणाम.. परिणाम.. समस्त प्रकारे नमन नाम उत्पन्न होना. ये अपनेसे (उत्पन्न) हुई है, द्रव्यसे नहीं, गुणसे नहीं, परसे नहीं. आडाडा! आवुं अडीं क्यां संभणवा मणे? है संस्कृत है. १४वीं गाथा है न? आज़िरमें. परिसमंतात्.. परि+याय. पर्याय क्यों कडा? कमबद्ध पर्याय-परिणाम क्यों कडा? परि समंतात् भेदम् इति गच्छतीति पर्यायरूपी भेद उत्पन्न होता है द्रव्यमें. भेदम् इति गच्छति इति पर्यायः अर्थात् जो सर्व तरङ्गसे भेदको प्राप्त हो ये पर्याय है. समझमें आया?

तो ये परिणाम भी पर्याय है. तो द्रव्यमें ये सर्व प्रकारसे अपने परिणाम भेद होकर अपनेसे होता है. परके कारणसे अणुवकी पर्याय होती है (ऐसा है नहीं). आडाडा! जैसे काउस्सगग लगाना, मैं ऐसा काउस्सगग.... शरीरकी पर्याय कममें जैसे होती है तो ऐसा होता है. उससे 'मैंने ऐसा किया' (ऐसा मानना) ये तो उसका अभिमान है. कौन लगाते हैं? कोई लगाते नहीं. मानते हैं. अज्ञानी मानते हैं कि हम जैसे करते हैं. भगवानकी स्तुति भी यलती है तो वाणीकी पर्यायसे यलती है अने कमसर पर्याय है उससे यलती है. आडाडा! मंदिर भी हुआ, प्रतिमा भगवानकी उपरमें... वो कमसर जड-अणुवकी पर्याय होनेके कारणसे परिणाम वहां हुआ है. ये परमाणुमें भेदम् इति गच्छति... उस समय भेदरूप पर्यायकी उत्पत्ति है तो कमसर उत्पन्न होता है. दूसरा जव कि दूसरा अणुव उसको बनाये ऐसा तीन कालमें होता नहीं. आडाडा!

यहां तो थोडा... मैंने किया, मैंने किया, हमने किया, ऐसा मैंने किया, ऐसा मैंने किया.... यहां तो दरेक अणुवकी पर्याय व्यवस्थित है. व्यवस्थितका अर्थ व्यवस्था. व्यवस्थाका अर्थ विशेषे अवस्था. व्यवस्थाका अर्थ विशेषे अवस्था. सामान्य परमाणु जो द्रव्य है उसकी विशेष अवस्थाको व्यवस्था कहते हैं. तो परमाणुकी व्यवस्था द्रव्यमें पर्यायसे होती है. आडाडा! समझमें आया? आ जीण्णी वात छे भाई! अत्यारे तत्त्वनो फेरफार बहु थई गयो छे. मान लेते हैं कि हमारे धर्म होता है. भगवानकी स्तुति की, भगवानको यावल यढाया, केसर यढाया. अब तो भगवानका अभिषेक करते हैं पंचामृतसे. भगवान तो वीतराग हैं. मूर्तिको पंचामृत भी होता नहीं. आडाडा!

ये मूर्ति भी स्थापन हुई है वो कमपर्यायसे वहां स्थापन हुई है. स्थापन करनेका भाववाला था तो कममें शुभभाव आनेवाला तो आया. ये शुभभावसे तो..... सब कममें है. सब कममें है. ... भोपालमें थे न? भोपालमें गये थे न? पवैयाज! भोपालमें पंचकल्याणक था तब आये थे न? ४० हजार माणसो थे. व्याप्यान-प्रवचनमें ४० हजार. सब सुनते थे, पण वो सब आनेवाली पर्याय थी तो आयी है. आडाडा! अने भाषाकी निकलनेका काल है तो भाषा निकलती है. प्रभु! ऐसी बात है. ये जड है. जड कमबद्ध अपने परिणामसे उत्पन्न होता है. आडाडा! आ वात बेसे...

श्रोता : निश्चयसे तो ऐसा है.....

पूज्य गुरुदेवश्री : निश्चयसे नाम यथार्थ जैसी वस्तुकी स्थिति है औसा यह है. इससे विपरीत मानना यह द्रष्टि विपरीत है. आडाडा! अम के निश्चयसे औसा है. तो व्यवहारसे होता है कि नहीं? स्पष्टीकरण कराते हैं. आडाडा! यहां तो कहते हैं कि श्रीमदने अक बार कडा.... श्रीमद् राजयंद्र. तिनकाका टूकडा करना ये भी आत्मामें ताकात नहीं है. अक तिनका-तरशा. तिनकाका दो टूकडा करना ये आत्माकी शक्ति नहीं. तो टूकडाकी पर्याय कमबद्धमें होनेवाली है तो होती है. आडाडा! पुरुषार्थ तो अज्ञानका करे. माने कि मैं भेड करता हूं, बणदको जेतता हूं, बणदको यत्नाता हूं. ये सब अतिमान मिथ्यात्व अतिमान है. आडाडा!

ये कहते हैं, इसीप्रकार नाम जवनी पेठे-जवनी जेम, **अजीव भी क्रमबद्ध अपने परिणामोंसे..** आडाडा! 'परिणामोंसे' क्यों कडा? अनंत परिणाम हैं न? दरेक परमाणुमें अनंत गुण हैं, तो अक समयमें अनंती पर्याय उत्पन्न होती है. अक परमाणुमें अक समयमें अनंती पर्याय (होती है). क्योंकि अनंत गुण हैं न? तो उसकी अनंती पर्याय कमबद्धमें-कमसरमें आनेवाली है वो आयी है. आडाडा! आवुं काम. निश्चयसे औसे है, पण व्यवहारसे कर सकता है न? औसे कहते हैं. व्यवहारसे बोलनेमें आता है. उसने कडा कि ये शहरे मेरा. समजमें आया? गाव मेरा, राजकोट मेरा. सरदारशहरे.... सरदार शहरे नहि, कौनसा गाव? सहरानपुरके डम रहनेवाले. सहरानपुर दूसरी यीज है, तुम रहनेवाले दूसरी यीज हो. सहरानपुरमें रहनेवाले तुम हो? तुम तो आत्मामें रहनेवाले हो. रागमें रहनेवाले भी नहीं, तो शहरेमें रहनेवाले (कडां)? आडाडा! बडोत डेर है.

अजीव भी क्रमबद्ध अपने परिणामोंसे उत्पन्न होता हुआ.. आडाडा! पाणी उष्ण होता है अग्निके निमित्तसे, तो कहते हैं कि उष्ण होनेके कममें पाणीमें उष्ण होनेका पर्यायका काल था तो उष्ण हुआ, अग्निके नहीं. आडाडा! समजमें आया? आ तो द्रष्टांत छे. सिद्धांत तो ये है कि प्रत्येक अजव पदार्थमें अपने स्वकालमें कमसरमें आनेवाले परिणामसे ये परिणाम होता है. आनेवाला है और होनेवाला है, स्वकाल है. आडाडा! भरेभर तो जो भी परिणाम (होता है) परमाणुमें ने अजवमें, वो षट्कारकसे परिणामन होता है. ये परमाणुका परिणाम भी....

पंचास्तिकाय दर गाथा है. पंचास्तिकाय. उसमें, जव और कर्म—दोनों(के परिणाम) अपने परिणामसे हुआ है औसा पाठ है. दर गाथा, पंचास्तिकाय. वो यथा हुआ थी वशीकि साथ. विकार अपनेसे होता है, परसे नहीं. यहां तो अभी निर्मल पर्यायकी बात यलती है. निर्मल पर्याय भी अपनेसे कमसर होनेवाली है तब होती है. उसका अर्थ, धर्मकी निर्मल पर्यायका आश्रय द्रव्य (कडना) ये व्यवहार है. तो द्रव्य उपर द्रष्टि जायेगी—पर्याय अपने द्रव्यकी तरफ लुकेगी.. आडाडा! पर्याय मुज बढलेगी—पर्यायका मुज राग, पुण्य ने दया-दान ने विकल्प उपर है, ये पर्याय मुज बढलेगी, अपने द्रव्य तरफ मुज बढलेगी, तब उसको कमबद्धमें सम्यग्दर्शन ने धर्म होता है.

श्रोता : मुज कैसे बढलना है?

पूज्य गुरुदेवश्री : ये है उसको जैसे करना है. मोढ़ूं आम छे तो आम करी नाभ. समजमें आया ?

कोई भी परका कर सके ऐसा छे तो, ये ऐसा है (उसे) ऐसा कर दो. आछा! जैसे था, जैसे कर दो. जैसे नहीं छेती. समजमें आया? ऐसा है..... आछाछा! वात बहुत जीझी छे बापु! भगवान सर्वज्ञ परमात्मा.... अनंत द्रव्य जैसे हैं.... अनंत अनंतपने कब रहेंगे? अनंतमें अेक द्रव्यकी पर्यायका दूसरा कर्ता न छे तो अनंत अनंतपने रहेंगे. जो दूसरा द्रव्य दूसरेकी पर्यायका कर्ता छे तो ये पर्याय बिनाका वो द्रव्य रछा. पर्याय बिनाका द्रव्य रछता नहीं. अेक (द्रव्य) पर्याय बिना रछा, दूसरा दूसरेका कर्ता छे तो वो पर्याय बिनाका द्रव्य रछा. पर्याय बिनाका द्रव्य रछे तो द्रव्यका भी नाश छेता है. आछाछा! समजमें आया? शेर! ऐसी जीझी बात है. शेर अेटला भाग्यशाणी के शिबिरमें आवे छे, दुनियासे छूट जाता है.

यछां तो ये कछते हैं कि कोई भी रजकष के कोई भी परमाशुका र्कंध... ये र्कंध है उसमें जो परमाशु है, ये परमाशु भी कमसर अपनी पर्यायसे उत्पन्न छेता है. ये र्कंधमें आया है तो ऐसी पर्याय छुई ऐसा नहीं. ये परमाशुकी लोडीकी... ये लोडी है न? लोडीको क्या कछते हैं? भून. उसकी पर्याय छुई न, तो परमाशु यछां आया तो भूनकी पर्याय छुई ऐसा है नहीं. ये परमाशुकी भूनकी पर्याय छेनेकी योग्यतासे कमबद्ध आनेवाली थी तो आयी है. आछाछा! प्रभु! तुम तो शाता-द्रष्टा छे न. जानने-देखनेवाला कर्ता छे जाये तो मिथ्यात्वपना आ जाता है. आछाछा! तुम तो.... शाता-अकर्ता सिद्ध करना है न? यछां तो अकर्ता सिद्ध करना है. उपर है न. बताया था.

आत्माका अकर्तृत्व दृष्टांतपूर्वक कहते हैं.. अमृतयंद्राचार्य. अकर्तृत्व... वे (-अज्ञानी) ईश्वरको कर्ता कछते हैं तो यछां तो कछते हैं कि द्रव्य पर्यायका कर्ता नहीं. ईश्वर कर्ता तो है नहीं कोई चीजका, पक्ष चीजकी जो पर्याय है उस पर्यायका द्रव्य कर्ता नहीं. दूसरा द्रव्य तो नहीं कर्ता... आछाछा! आकरी वात छे भाई! ये तो परमात्मा जिनेश्वरदेव त्रिलोकनाथने सर्वज्ञस्वभावमें ऐसी पदार्थकी मर्यादा-स्थिति देजी है ये बात है. दुनिया माने कि न माने. उसको-सत्यको संभ्याकी जरूर नहीं. लाभो माने तो सत्य कछेवाय, थोडा माने तो असत्य कछेवाय—अेवुं छे नहीं. वो कछते हैं. आछाछा!

आ कोडियुं... श्री भरत भरती है न? भरत कपडेमें. तो कछते हैं कि ये पर्याय श्रीके आत्माने किया ऐसा डराम है. भरत भरती है न कपडेमें? अडीया गोठवी दीधुं.... वे (अज्ञानी) कछते हैं कि श्रीने किया, इसकी ईच्छा छुई तो छुआ. ये बिलकुल जूठ है. आछाछा! भरत भी अपनी पर्यायमें कमबद्धमें छेनेवाली पर्यायसे छेता है. आछाछा! शुं कछेवाय? तोरष करते हैं न? तोरष... तोरष... उसमें दाशा.... छथी बनाते हैं. मोतीको... ये गोठवाणीकी पर्याय श्रीने की कि उसकी अंगुलीसे छुआ (ऐसा है नहीं).

श्रोता : ...से भून निकलता है...

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : યે નહીં, અપનેસે ખૂનકી પર્યાય નીકલતી હૈ. આહા! દેખો! યે અંગુલી હૈ ન? યે અંગુલી ઉસકો અડી (-છુઈ) હી નહીં. ઐસે ખડા હુઆ, યે ખડેકી પર્યાય ક્રમસર પરમાણુમેં હોને(વાલી) હુઈ હૈ, ઉંગલીસે નહીં હુઈ. આહાહા! સમજમેં આયા? યે બાત.... પણ સંયોગસે દેખતે હૈં, ઉસકી પર્યાયકો દેખે તો..... અંગુલી દૂસરી ચીજ હૈ ઐર વો હુઆ દૂસરી ચીજ હૈ. વો સંયોગસે દેખતે હૈં, પણ ઉસકી પર્યાય ઉસમેં (અપનેમેં) ઉત્પન્ન હુઈ ઉસ દ્રષ્ટિસે તો દેખતે નહીં. આહાહા! સૂક્ષ્મ બાત હૈ ભાઈ! અભી તો ગડબડ બહુત હો ગઈ હૈ.

પુસ્તક બનાના, વો ભી (પરમાણુકી) અપની પર્યાયસે હોતા હૈ. પુસ્તક હમને બનાયા... આહાહા! આચાર્ય મહારાજ તો કહતે હૈં, યે ટીકા... હમને ટીકા બનાયી ઐસે મોહસે ન નાયો. હમ તો જ્ઞાતા(-દ્રષ્ટા) હમારે સ્વરૂપમેં હૈં. હમારે સ્વરૂપસે બહાર નિકલકર યે ટીકાકી રચના હુઈ (ઐસા હૈ નહીં) અને વિકલ્પ આયા હૈ તો ટીકાકી રચના હુઈ ઐસા ભી નહીં. વિકલ્પ આયા હૈ તો વિકલ્પ મેરા કર્તવ્ય હૈ યે ભી નહીં. આહાહા! મૈં તો જ્ઞાતા (હું). અકર્તા સિદ્ધ કરના હૈ ન? પરકા તો કર્તા નહીં, પણ રાગકા ભી કર્તા આત્મા નહીં. દયા-દાન-વ્રતાદિકા વિકલ્પ આતા હૈ, પણ આત્મા કર્તા હૈ ઐસા નહીં. ક્યોંકિ આત્મા પવિત્ર પિંડ પ્રભુ હૈ, વો વિકારકો ક્યોં કરે? ચક્રવર્તી રાજાકો મકાનકી ધૂલ સાફ કરનેકો કહના કિ ચક્રવર્તી! ધૂલ નિકાલ દે. ઐસે ભગવાન આત્મા અનંત પવિત્ર ગુણકા પિંડ હૈ ઉસકો દયા-દાન વિકલ્પકા કર્તા બનાના, યે ચક્રવર્તીકો ધૂલ નિકાલનેકો (કહને જૈસી) બાત હૈ. આહાહા! યે દ્રષ્ટાંત આતા હૈ શાસ્ત્રમેં. શાસ્ત્રમેં સબ ભરા હૈ. દિગંબર શાસ્ત્રમેં દ્રષ્ટાંત ઐર ન્યાય સબ ભરા હૈ. જહાં જહાં જૈસે ચાહિયે વહાં વહાં સબ ભરા હૈ.

ક્રમબદ્ધ અપને પરિણામોંસે ઉત્પન્ન હોતા હુઆ... જોયું! ઉત્પન્ન હોતા હુઆ અજીવ હી હૈ.. યે પર્યાયકો અજીવ કહા. અજીવકી પર્યાયકો અજીવ કહા, જીવકી પર્યાયકો જીવ કહા.—એમ અત્યારે લેવું છે. નહીં તો જીવદ્રવ્ય હૈ વો પર્યાયમેં આતા નહીં, ઐસે અજીવદ્રવ્ય હૈ વો પર્યાયમેં આતા નહીં. પણ યે પર્યાય ઉસસે હુઈ હૈ ઐસે બતાના હૈ. પરસે નહીં હુઈ અને ક્રમસે આનેવાલી (થી વો) હુઈ હૈ—આયી હૈ, યે બતાકર (કહા કિ) અજીવકા પરિણામ અજીવ હૈ. આહાહા! ઐસે ક્યોં કહા? અજીવકા પરિણામ અજીવ હૈ અર્થાત્ દૂસરે સાથમેં જીવ હો તો ઉસસે હુઆ ઐસા હૈ નહીં. એ ના પાડે છે દેખો! **અજીવ હી હૈ, જીવ નહીં..** હૈ? ‘જીવ નહીં’ ઐસે ક્યોં કહા? કિ જીવ સંયોગમેં હો, તો ઉસસે વહ પર્યાય જડકી હુઈ હૈ ઐસા તીન કાલમેં નહીં. આહાહા!

આ વાત.... પછી સોનગઢનું એકાંત છે.. એકાંત છે, ઐસા કહતે હૈં. કહો પ્રભુ! ભગવાન કહતે હૈં (કિ સોનગઢ કહતા હૈ?) કિસકી બાત હૈ યે? આહાહા! ત્રણ લોકના નાથ તીર્થંકરદેવ સીમંધર ભગવાનકે શ્રીમુખસે નિકલી હુઈ વાણી હૈ. યે કુંદકુંદાચાર્યને સુની હૈ ઐર યહાં આકર યે શાસ્ત્ર બનાયા. આહાહા!

શ્રોતા : આપ ઉસ સમય થે?

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : તભી વહાં થે. સુનનેકો ગયે થે. એ વાત એટલી..... યે તો ભગવાન કુંદકુંદાચાર્યકી બાત હૈ. આહાહા!

યહાં કહતે હૈં, **અજીવ હી હૈ..** યૂં લિયા. એકાંત નહીં હૈ ન? એસે કહતે હૈં કિ કથચિત્ અજીવપર્યાય અજીવસે હુઈ, કથચિત્ જીવસે હુઈ—એસે અનેકાંત કહો. યે અનેકાંત હૈ નહીં પ્રભુ! યે એકાંત તો હૈ. યે કહતે હૈં કિ અજીવકી અપની પર્યાયસે અજીવ ઉત્પન્ન હુઆ યે અજીવ હી હૈ.. અજીવ હી હૈ.. આહાહા! યે હોઠ હલતે હૈં તો અજીવકી પર્યાય અજીવ હી હૈ, જીવ નહીં. એસે ક્યોં કહા? અંદર જીવ હૈ તો ઉસસે હોઠ હિલા હૈ એસા નહીં, માટે જીવ નહીં. આહાહા! ઈતના અભિમાન છોડના..... આહાહા!

શ્રોતા : મડદું કેમ બોલતું નથી?

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : મડદું બોલતું..? મડદું ચાલે પણ છે. સુના હૈ?

રાતકો... અમને તો નજરે પડેને. હમારા બડા ભાઈ થે. વો ૫૭કી સાલમેં ગુજર ગયે. બડે ભાઈ થે, બહુત સુંદર થે, બહુત હુશિયાર થે. મુંબઈકા પાની લગ ગયા થા. ૫૭, સંવત ૧૯૫૭. તબ હમારી ઉંમર ૧૧ વર્ષકી થી. ૧૧ વર્ષકી. ૪૬મેં જન્મ હૈ. રાતકો વો ગુજર ગયે, હમને દેખા થા. રાત્રિકો ઉસમેં સુલાયે... વો કોશ... કોશ સમજતે હો? લોહેકી કોશ હોતી હૈ ન? ક્યા કહતે હૈં? યે લોહેકી કોશ નહીં હોતી? એ મૂકી છાતી પર. ક્યોંકિ મુર્દા ખડા ન હો જાય. મુર્દા ભી ખડા હો જાતા હૈ. યે મુર્દા ભી.... પર એસા હોનેવાલા હો તબ.... કોશ.. કોશકો ક્યા કહતે હૈ? લોહેકી હોતી હૈ ન લંબી? ખોદનેકી... હમને દેખા હૈ.

૫૭કી સાલ. હમ તો છોટી ઉમ્મરે થે. હમારી માતાજી કહે, યહાંસે નિકલ જાઓ. મામાને ઘેર જાઓ. મામા ગૃહસ્થ હતા, બધા બહુ પૈસાવાળા હતા. મામા હતા પૈસાવાળા. કલ્હું, અહીંથી ચાલ્યા જાઓ. તમે નહીં દેખી શકો. અહીં સૂવું નહીં. ભાઈ ગુજરી ગયા છે. મુર્દા રખા હૈ તો યહાં સોના નહીં. યે ૫૭કી બાત હૈ. કિતને વર્ષ હુએ? ૭૮ વર્ષ પહલેકી બાત હૈ. વો મુર્દાકો રખતે હૈં એસા. બાકી તો મુર્દેકી પર્યાય એસી ખડી હોનેકી નહીં થી તો બાહ્ય નિમિત્ત... પણ હોનેકી થી ઔર રખા તો નહીં હુઆ એસા ભી નહીં.

વો હમને દેખા હૈ. ૧૧ વર્ષની ઉંમરે ૫૭ મેં. છપ્પનીયો દુકાળ હતોને. ૫૬મેં બડા અકાલ (પડા) થા. ૫૬મેં વરસાદ નહીં થા. હમારી તો છોટી ઉમ્મર થી ૧૦ વર્ષકી. બડા અકાલ.. બહોત દુકાળ.. એસા દુકાળ કિ હમ લડકે નદીકે પાર ગયે, નદીકો દેખને. એક ભરવાડ ખડા થા. ભરવાડ ખડા થા ઔર ગાય ૨૫, ૩૦, ૪૦, ૫૦ ખડી થી. ગાયોકી આંખોમેં આંસુ.. આંસુ.. ભરવાડકો પૂછા... ભાઈ! ચાર-પાંચ દિનસે ઘાસકા એક તૃણ ભી નહીં મિલા ગાયકો. એક તિનકા નહીં. ૫૬ કી સાલમેં..... પાંચ ઈંચ વરસાદ આયા થા પહલે. બસ, પીછે નહીં આયા. ૫૬કી બાત હૈ. ભરવાડ ખડા થા. ભરવાડ સમજતે હો? ગાયોકા ગોવાળ. ગોવાળની આંખ્યુંમાં

आंसु. अरे! आ गायुं... ३०-४० गाय. चार-पांच दिनसे अेक तिनका नडीं मिला. कडांसे लावे? घास डी नडीं उगा.

अभी भी अैसा सुना है. (वरसाद) जेयाई गयोने अेक मडिनो. अषाढ सुद त्रीज तक ११ ँय आ गया है. अभी नडीं आया. घास बिना बारड-चौदड डेर मर गये. थोडा थोडा घास उगा है. जेडे तो जाई शके. जेडनेकी शक्ति न डो, मर गये. पर वो समयमें वो पर्याय डोनेकी थी ईससे डोती है. आडाडा! घास न मिला माटे देड छूट गया अैसा है नडीं. देडकी पर्याय छूटनेकी थी और देडमें आत्मा रड तो आयुष्यके कारणसे रड—ये भी है नडीं. आयुष्य जड है और भगवान आत्मा चैतन्य है. तो जडसे आत्मा रड सके अंदरमें, अैसा है नडीं. अपनी पर्यायकी योग्यतासे कमसरमें शरीरमें रहनेकी योग्यता है एतने साल रहते हैं. जब योग्यता छूट जाती है तब छूटकर स्वर्गमें चले जाते हैं. धर्माजिवकी (भात है). समजमें आया?

आचार्यने द्रष्टांत दिया है. मनुष्यमेंसे स्वर्गमें (जाता है) ये द्रष्टांत अपना दिया है. कारण के आचार्य देड छोडकर स्वर्गमें जानेवाले हैं. चार गतिका द्रष्टांत हैं पंचास्तिकायमें, वडां वो दिया है. मनुष्यसे स्वर्ग ने स्वर्गसे फिर मनुष्य डोकर.... कुंदकुंदाचार्य आदि कितने संत तो केवलज्ञान पाकर मोक्ष जानेवाले हैं. अैसी स्थिति है. ये मनुष्यका द्रष्टांत अैसा दिया है. मनुष्य मरकर नरक कि तिर्यचमें जाते हैं अैसा नडीं दिया. मनुष्य मरकर स्वर्गमें जाते हैं अैसा दिया. कारण के अपनी भात की है. अपने कमसे देड छूट जायेगा तो डमें कमसे स्वर्गकी गति मिलेगी. केवलज्ञान है नडीं, पूर्ण प्राप्ति है नडीं तो देड तो मिलेगा, पण ये जडके कारणसे जड संयोग मिलेगा. अपनी योग्यताके कारणसे वडां स्वर्गमें रहते हैं. श्रेणिक राजा भी अभी नरकमें भी हैं... श्रेणिक राजा नरकमें हैं नडीं, वे अपनी पर्यायमें और गुणमें हैं. आडाडा!

परको कभी छुआ डी नडीं, तो परमें रहे अैसा कडां है? बडु कडण.. कडण.. भाई! समजमें आया? अेकने तो प्रश्न किया था कि श्रेणिक राजा मरकर नरकमें गये. देजो! नरकगतिका उदय आया तो उन्हे जाना पडा. नरकगति बांधी थी न पडली? मुनिकी अशातना की थी. नरकका आयुष्य बंध गया. बडा आयुष्य बंध गया था. पीछे मुनि मिले और मुनिके पास समकित पाया. वो बडुत (लंबी) स्थिति बंधी थी वो तोडकर ८४००० वर्षकी रह गई. ८४००० वर्ष है. अभी भी (नरकमें) हैं. पर अपनी पर्यायकी योग्यतासे (है). गतिका उदय है उस कारणसे वडां गये हैं अैसा है नडीं. आडाडा! अनुपूर्वी भी जूठी है. नामकर्ममें ८३ प्रकृतिमें अेक अनुपूर्वी प्रकृति है. ये अनुपूर्वी प्रकृति क्या है? कि अेक गतिमेंसे दूसरी गतिमें ले जाना. अैसे कडते हैं ये सब निमित्तसे कथन है. आडाडा!

ये बैल है न? नाथ, बैलको नाकमें नाथ डालते हैं (फिर) जेयते है. अैसे आनुपूर्वी जेयकर ले जाते हैं अैसा लेज है. वो तो आनुपूर्वी प्रकृति है अैसा निमित्तका ज्ञान करानेको (कथन) है. बाकी अपनी पर्यायकी योग्यतासे कर्म है तो उस प्रकारसे स्वर्गमें जाते हैं, नरकमें जाते हैं. आडाडा! तो **अपने परिणामोंसे उत्पन्न होता हुआ अजीव ही है, जीव नहीं...** आ

अनेकांत छे. जवसे भी डो ओर अजवसे भी डो तो अनेकांत (कडलाये)—ये अनेकांत नडीं. आडाडा! कथंयित् अपनी पर्याय अपनेसे, कथंयित् परसे—ऐसा कडो तो अनेकांत सिद्ध छेता है.—ऐसा है नडीं. **जीव नहीं...** जवकी पर्याय उसको (अजव) उत्पन्न कर सके ऐसा बिलकुल है नडीं. क्यों?

उवे द्रष्टांत आपे छे. जैसे (कंकण आदि परिणामोंसे उत्पन्न होनेवाले ऐसे) सुवर्ण ... सोना.. सोना.. सुवर्ण.. **कंकण आदि परिणामोंसे...** कंकण, कडा, वींटी विगेरे. **परिणामोंके साथ तादात्म्य है...** आडाडा! सोना जो जेवररूप हुआ, उस जेवर(रूप) परिणामसे सोना तादात्म्य है. जैसे उष्णताके साथ अग्नि तादात्म्य है, जैसे ज्ञानके साथ आत्मा तादात्म्य है—तत्स्वरूप है, जैसे सुवर्ण कंकण (आदि) अपनी पर्यायसे तादात्म्य है. परसे हुआ डी नडीं. सोनेमेंसे कंकण हुआ वो सोनीसे हुआ नडीं. आडाडा! क्योंकि उसके परिणामोंसे तादात्म्य है. ये परिणामोंसे सोना उत्पन्न हुआ है. जेवरकी अवस्था सोनेसे उत्पन्न हुई है, सोनीसे नडीं, डथोडीसे नडीं, नीचे अरइसे नडीं. आवी वातुं... आकरुं लागे माइसने. आओ दि' अमे आ करीअे छीअे, आ करीअे छीअे वेपार-धंधा. कौन करता है? बापु! सब संयोगसे द्विभता है. बाकी संयोगी पर्याय तो उसके कारणसे छेती है. तुम मानते डो कि डमारेसे ये हुई, ये तो मिथ्यात्वका पोषण है. मिथ्यात्व संसार है, ये मिथ्यात्व डी आस्रव और संसार है. ये अडंकार निकालना (और) भेदज्ञान करना वड अलौकिक बात है.

जडकी पर्याय मेरेसे नडीं और मेरी पर्याय जडसे नडीं. आडाडा! जैसे भेद करना... यडां कडा, **सुवर्णका कंकण आदि परिणामोंके साथ तादात्म्य है.** सोनेमेंसे जो जेवर छेता है ये परिणाम हैं. परिणामके साथ सुवर्ण तादात्म्य है. परिणामके साथ सोनी तादात्म्य है? ये जेवरके साथ अरइ तादात्म्य है? ये परिणामके साथ डथोडी तादात्म्य है? आडाडा! जेवर उत्पन्न हुआ है वो डथोडीसे नडीं, अरइसे नडीं, सोनीसे नडीं. आडाडा! पूर्व पर्यायसे भी नडीं. अेक समयमें जो पर्याय कमबद्ध उत्पन्न हुई है, वो पूर्वकी पर्यायसे भी नडीं अने निश्चयसे तो सुवर्णके द्रव्य-गुणसे भी नडीं. आडाडा!

तादात्म्य कडा है न? **उसी प्रकार सर्व द्रव्योंका... सर्व द्रव्योंका अपने परिणामोंके साथ तादात्म्य है.** जवका परिणाम अपने आत्माके साथ तादात्म्य है. अजवका परिणाम अजवसे तादात्म्य है. अेक परमाणुका परिणाम वो परमाणुसे तादात्म्य है. कोईपण यीजका परिणाम उस तत्त्वसे तत्त रूप है, परके साथ कोई संबंध है नडीं. आडाडा! शिक्षण शिबिरमें ऐसा अर्थ निकालते हैं. आ छे बापु! अरेरे! अनादिकाणथी ८४ लाजमां.... भाई! भूली गयो ८४ लाजना अवतारने...

श्रोता : बीजा पूछे केआनाथी आ थाय छे?

पूज्य गुरुदेवश्री : अे बीजा पूछे, न पूछे अे जाणे. अडीं तो वस्तुस्थिति आ छे. आ बीजा पूछे अेनी तो वात याले छे. ये डजारो माइसमें तो बात यलती है. पूछे (अैसी)

भाषाकी पर्याय भी पूछनेवालेकी किया नहीं है. दरबार! अेवी वात छे भाई! आडाडा! परम सत्यकी बात है. आडाडा! इसप्रकार जीव अपने परिणामोंसे उत्पन्न होता है तथापि उसका अजीवके साथ कार्यकारणभाव सिद्ध नहीं होता... क्या कलते हैं? कोई कले कि जव अपने परिणामोंसे तो उत्पन्न होता है न? एतना तो कारण ने कार्य करता है न? जव अपने परिणामका कार्य तो करता है न? अपने परिणामका कार्य करे तो दूसरेके परिणाम भी करे. जेम गोवाण अेक गायको यराने ले जाय, तो दूसरा कले, मेरी गाय भी ले जा. अैसा आता है. गोवाण है न? गोवाण. अेक गायको ले जाय तो हमारी गायको भी साथमें ले जा. हमारे कलं..... अैसे अजवका परिणाम होता है? समजमें आया?

उसमें दूसरे द्रव्यका भी परिणाम कारणरूप डो तो उसमें क्या है? आडाडा! जुओ, प्रभु! आत्मामें अेक अकार्यकारण नामका गुण है. क्या कल? ४७ गुण है न? उसमें अकार्यकारण नामका अेक गुण है. १४वा है. आडाडा! ४७में १४वा है, अकार्यकारण. आत्मा परका कार्य नहीं अने आत्मा राग ने परका कारण नहीं. आडाडा! पीछे है ४७ शक्ति. है कि नहीं? ११२ पन्ना? श्लोक.. श्लोक.. १३. १४में आया.. 'अन्यसे नहीं किया जाता और अन्यको नहीं करता अैसा अेक द्रव्यस्वरूप अकारणकार्यशक्ति है.' है अंदर? १४वी है. १३ नंबर पीछे १४वी. 'अन्यसे नहीं किया जाता...' आडाडा! आत्मामें जडसे कोई पर्याय नहीं की जाती और आत्मामें रागसे सम्यग्दर्शनकी पर्याय नहीं की जाती. आडाडा! 'अन्यसे नहीं किया जाता...' 'अन्यसे'में परद्रव्य ने राग सज लेना. क्योकि शक्तिका वर्णन है न? तो शक्तिके वर्णनमें पर्याय निर्मल डी ली है. कम-अकम लिया है पीछे उसमें. अकम गुण ने कम पर्याय, पर ये कम पर्याय निर्मल ली है. शक्तिका वर्णन है न? कम-अकममें यलं अेकसी निर्मल पर्याय डी ली है. कममें राग.... क्योकि शक्ति है वो वस्तुका गुण है. गुणको धरनेवाला द्रव्य है वड पवित्र है और शक्ति भी पवित्र है, तो पवित्रताका परिणाम पवित्र है. समजमें आया?

रागका परिणाम आत्माका है अैसा यलं है नहीं. शक्तिके वर्णनमें शुडआतमें और पीछे दोनों जगड अैसे लिया है. आडाडा! नयका अधिकार, प्रवचनसारमें ४७ नयका अधिकार लिया है यलं लिया है ज्ञान करानेको. धर्माजव गणधर हैं उनके भी जरा विकल्प आया शास्त्र रयनेका, तो उनका परिणामन है तो कर्ता कलनेमें आते हैं. आडाडा! परिणामनकी अपेक्षासे कर्ता कलनेमें आता है, करनेलायक है माटे कर्ता है अैसा नहीं. आडाडा! समजमें आया? प्रवचनसारमें अैसा लिया है. कर्तानय है, भोक्तानय है. यलं ये नहीं लेना. ये द्रव्यद्रष्टिका विषय है. शक्तिका वर्णन है. समजमें आया? आडाडा!

श्रोता : समयसार ... कि प्रवचनसार ... ?

पूज्य गुरुदेवश्री : दोनों ज्ञानकी प्रधानतासे जाननेलायक यीज है अैसे मानना. द्रष्टिकी अपेक्षासे अपना परिणाम निर्मल डी होता है अैसा मानना.

आगे है, प्रश्न है आगे. 'जिसमें कम-अकमसे प्रवर्तमान अनंत धर्म हैं ऐसा आत्मा ज्ञानमात्र किस प्रकार है?' उसमें है पडले ये बात. 'जिसमें कम-अकमसे प्रवर्तमान अनंत धर्म हैं...' પણ यहाँ कम लेना निर्मल. यहाँ कममें मलिन न लेना. पडले शब्द है. पीछे भी है. ये तो बडोत बार सत्तामें १८ चल गया है. ये १८वीं बार चलता है. उत्तर है?

'प्रश्न : जिसने कम-अकमसे प्रवर्तमान अनंत धर्म हैं ऐसा आत्मा ज्ञानमात्र कैसे है?' वो तो ज्ञानमात्र ही है. 'परस्पर भिन्न जैसे अनंत धर्मोंके समुदायरूपसे परिणामित अक शक्तिमात्र भावरूपसे स्वयं ही है.' समझमें आया? ये अनंत शक्तिमें कम तो निर्मल लिया है. दूसरी (जगह) पंचास्तिकायमें ६२ गाथामें लिया, वहाँ विकारकी पर्याय स्वतंत्र षट्कारकसे परिणामती-डोती है ऐसा लिया है. वहाँ तो ज्ञेय अधिकार है तो ज्ञेयको बताना है. यहाँ तो द्रष्टिप्रधान शक्तिका वर्णन है. शक्ति पवित्र हैं सब अने पवित्रको धरनेवाला प्रभु भी पवित्र द्रव्य है. पवित्रसे कममें अपवित्रता आती है ये बात है नहीं. आती है अपवित्रता, પણ वो अपवित्रताका ज्ञान करती है ये ज्ञानपर्याय अपनी है. आडाडा! समझमें आया?

वो तो कछा था न? भाव नामका अक गुण है. भावगुण है. उसमें पीछे है. भाव है न? अंदर शक्ति है. भावशक्ति है. हेजो! उउवी. 'विद्यमान अवस्था युक्तपनेरूप भावशक्ति.' अमुक अवस्था जिसमें विद्यमान हो वह भावशक्ति. उउवी शक्ति है. ये भावशक्तिके कारणसे उसकी पर्याय निर्मल ही डोती है. निर्मलकी बात है यहाँ. मैं करुं तो पर्याय निर्मल हो ऐसा विकल्प भी जहाँ नहीं. आडाडा! जहाँ द्रव्य पर द्रष्टि कर पर्याय ठुक गઈ, द्रव्यमें भाव नामका गुण है उस कारणसे अनंत गुणकी पर्याय निर्मल ही प्रगट डोती है. आडाडा! समझमें आया? अक भाव(गुण) ये लिया. अक भाव(गुण) दूसरा है. आडाडा! आगे है.

उउ. जूओ! 'कर्ता-कर्म आदि कारकोंके अनुसार जो क्रिया...' ये विकार है. विकार पर्यायमें डोता है, 'उससे रहित भवनमात्रमय डोनेवाली भावशक्ति.' दो प्रकारकी शक्ति है. अक भावशक्ति, अनंत गुणमें भावशक्ति पडी है तो दरेक गुणकी अक समयमें डोनेवाली पर्याय डोगी, डोगी ने डोगी. मैं करुं तो डोगी ऐसा है नहीं. ये अक भावशक्ति. अक भावशक्ति, विकारका परिणाम षट्कारक(रूप) परिणामन डोता है उससे रहित परिणामन ये भावशक्तिका झल है. विशेष कहेगे.

(प्रमाण वचन गुरुदेव)